RAJPUT TUTORIALS

छत्तीसगढ़ का इतिहास – प्रागैतिहासिक काल से नल वंश तक

Name : ..... Date : ...../...../.....

✓ प्रागैतिहासिक काल

विकास की अवस्था के आधार पर इस युग को चार भागों में विभाजित किया गया है–

1. पूर्व पाषाण काल
2. मध्य पाषाण काल
3. उत्तर पाषाण काल
4. नवपाषाण युग

1. पूर्व पाषाण काल
– महानदी घाटी
– सिंघनपुर गुफा, रायगढ़
– पत्थर के हस्तचलित कुदल

2. मध्य पाषाण काल
– कबरा पहाड़, रायगढ़
– लम्बे फलक तथा अर्द्ध चन्द्राकर लघु पाषाण के औजार
– गहरे लाल रंग में घड़ियाल, छिपकली और सांभर के चित्र

3. उत्तर पाषाण काल
(अग्नि का आविष्कार)
– धनपुर, बिलासपुर
– महानदी घाटी
– सिंघनपुर
– मानव आकृतियों का चित्रण
– ज्यामितीय अलंकरण

4. नव पाषाण काल
कृषि, पशुपालन
बर्तन निर्माण, कपास
(ऊन कातना)
– अर्जुनी, दुर्ग
– टेरम, रायगढ़
– चितवाडोंगरी (राजनांदगांव)

ताम्र और लौह युग

- ताँबे के औजार छत्तीसगढ़ से नहीं प्राप्त हुए हैं।
- बालाघाट जिले के गुंगेरिया से तांबे के औजार प्राप्त हुए हैं।
- लौह युग में शव को गाड़ने के लिए बड़े–बड़े शिलाखण्डों का प्रयोग किया जाता था। इसे 'महापाषाण स्मारकों' के नाम से जाना जाता है। पट्टतुम्ब (डॉलमेन)

✓ पाषाण घेरे – बालोद – करहीभदर, चिरचारी और सोरर
✓ पाषाण घेरे + लोहे के औजार + मृद भाण्ड – करकाभाठा, बालोद
✓ धनोरा, बालोद – लगभग 500 महापाषाण स्मारक प्राप्त हुए हैं। (एम. जी. दीक्षित 1956–57)

✓ महाकाव्य काल

कौशितकी ब्राम्हण ग्रंथ – विंध्याचल पर्वत का वर्णन

रामायण काल

कोसल
- उत्तर कोसल
- दक्षिण कोसल
  - राजा भानुमंत
    - पुत्री कौशिल्या
      - विवाह रामचन्द्र (पुत्र– राजा दशरथ)
        - पुत्र लव और कुश

– शिवरीनारायण
– खरौद

– रामगढ़ / रामगिरि – सीताकुण्ड
– सीता बेंगरा – किसकिंधा पर्वत
– लक्ष्मण बेंगरा
– तुरतुरिया – वाल्मीकि आश्रम
– सिहावा पर्वत
– श्रृंगी ऋषि का आश्रम
– पंचवटी
– दण्डकारण्य – साल वन

लव कुश की जन्मस्थलो – तुरतुरिया
लव – श्रावस्ती (राजधानी)
कुश – कुशस्थली (सिरपुर – छत्तीसगढ़ = राजधानी)

- **महाभारत काल** (सहदेव द्वारा जीता गया था इस क्षेत्र को)
  - ✓ छत्तीसगढ़ को प्राक्कोसल – मणिपुर – रतनपुर
  - ✓ बस्तर को महाकांतार या कांतार
  - ✓ प्रमाण – अर्जुन पुत्र भब्रुवाहन की राजधानी सिरपुर
    – पत्नी – चित्रांगदा
    – चांजगीर–चांपा – ऋषभतीर्थ, गुंजी
    – महासमुंद – सिरपुर, खल्लारी

✓ **महाजनपद काल / बुद्ध काल / महावीर**

– छठवीं शताब्दी ईसा पूर्व (BC) में भारत 16 महाजनपदों में विभक्त था।
– जिसमें से एक कोसल था। तथा एक चेदी महाजनपद था।

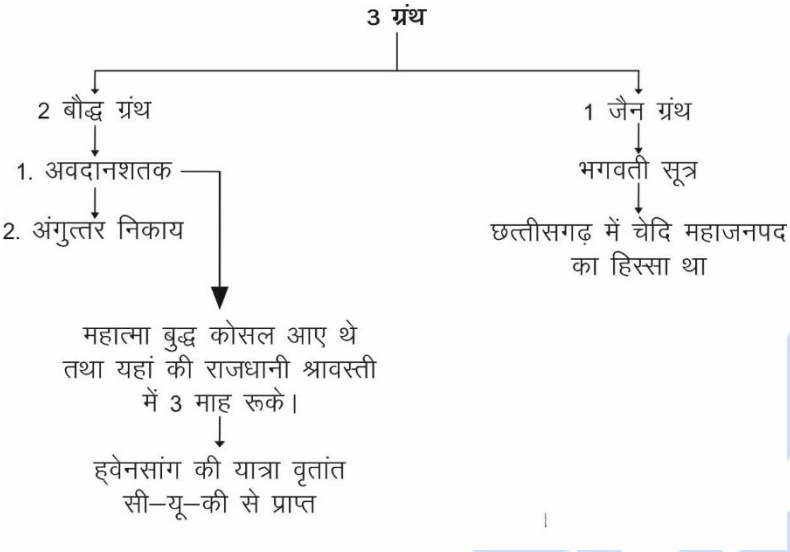

✓ **मौर्य काल (321/322 ई. पू.)**

चन्द्रगुप्त → बिंदुसार → अशोक

273 ई.पू. – 236 ई.पू. – अशोक

- ✓ अशोक के द्वारा कलिंग विजय किया गया।
- ✓ कलिंग (उड़ीसा)

छत्तीसगढ़ से अशोक के साक्ष्य

1. जोगीमारा गुफा, सरगुजा
2. कपाटपुरम – अशोक का लाठ – रामगढ़/रामगिरी के पास सरगुजा
3. कोटाडोल, कोरिया – अशोक कालीन मुर्तियाँ

मौर्यकालीन सिक्के जिसमें मयूर चिन्ह अंकित हैं। (आहत सिक्के)

✓ **सातवाहन काल (230 ई.पू. से 220 ई.)**

- ✓ दक्षिणापथ स्वामी
- ✓ राजधानी – प्रतिष्ठान
- ✓ शासक – 1. राजा शिव श्री अपीलक
  2. कुमार वीरदत्त श्री

1. **राजा शिव श्री अपीलक** (12 वर्ष इस क्षेत्र में)
   मुद्राएं – बालपुर में महानदी तट पर हाथी चिन्ह वाले चार वर्गाकार ताम्र सिक्के

2. **कुमार वीरदत्त श्री**
   – जांजगीर–चांपा से प्राप्त गुंजी के शिलालेख में कुमार वीरदत्त श्री को सातवाहन वंश का बताया गया है।

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

सातवाहन वंश के अन्य प्रमाण–

- जांजगीर–चांपा – किरारी ग्राम के तालाब से सातवाहन कालीन काष्ठ स्तंभ
- बिलासपुर के बुढ़ीखार मल्हार से रेखांकित प्रतिमा, रोमन स्वर्ण मुद्राएं, बालपुर से प्राप्त लाल मृदभांड।

✓ बौद्ध भिक्षु नागार्जुन इसी काल में छत्तीसगढ़ आए थे।

❖ **गुप्तकाल (240 – 319 ई. – 550 ई.)**

240 – 280 ई. – श्रीगुप्त] महाराजाओं के अधीन
280 – 319 ई. – घटोत्कछ] सामंत जैसी स्थिति
319 – 335 ई. – चन्द्रगुप्त – I – वास्तविक संस्थापक – (गुप्त संवत् – 319 ई.)
335 – 375 ई. – समुद्रगुप्त
375 – 380 ई. – रामगुप्त
380 – 414 ई0 – चन्द्रगुप्त – II विक्रमादित्य
– कुमार गुप्त
– स्कंद गुप्त

58 ई. – विक्रम संवत
78 ई. – शक संवत
319 ई. – गुप्त संवत

एरण अभिलेख
↑
भानुगुप्त 510 ई.

राजधानी – पाटलीपुत्र

समुद्रगुप्त – हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति या इलाहाबाद स्तंभ लेख (Allahabad Pillar Inscription) में छत्तीसगढ़ क्षेत्र का उल्लेख मिला है।

समुद्रगुप्त के दक्षिण विजय के दौरान पराजित छत्तीसगढ़ के शासक

- राजा महेन्द्र (वाकाटक)(दक्षिण कोसल)
- राजा व्याघ्रराज (नल वंश) (महाकांतार)

कोसल अर्थात् छत्तीसगढ़ तथा महाकांतार अर्थात् बस्तर पृथक राज्य थे।

चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) की पुत्री का विवाह वाकाटक राजकुमार रुद्रसेन द्वितीय से हुआ।

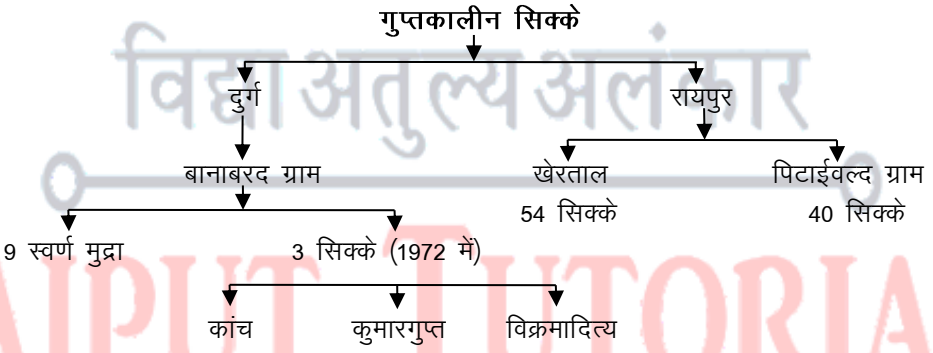

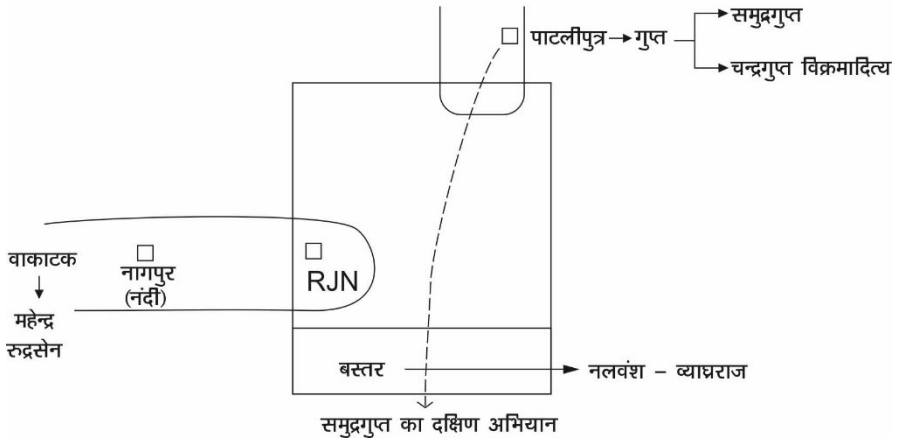

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS

❖ **वाकाटक वंश**

✓ राजधानी – नंदीवर्धन (नागपुर)

शासक

– महेन्द्र सेन
– रुद्र सेन
– प्रवरसेन
– नरेन्द्र सेन
– पृथ्वीसेन
– हरिसेन

✓ प्रवरसेन के शासन काल में चन्द्रगुप्त-II के भाट कवि कालिदास ने मेघदूत की रचना रामगढ़ (सरगुजा) की पहाड़ी में की थी

❖ **नलवंश**

✓ तीसरी से 5वीं शताब्दी ई.
✓ मुद्रा – बस्तर – एडेंगा, कोंडागांव
✓ राजधानी – कोरापुट, पुष्करी (भोपालपट्टनम)

शासक

290 – 330 ई. – शिशुक (संस्थापक)
330 – 370 ई. – व्याघ्रराज
370 – 400 ई. – वृषभराज
400 – 435 ई. – वराहराज
435 – 465 ई. – भवदत्तवर्मन
465 – 480 ई. – अर्थपति
480 – 515 ई. – स्कंद वर्मन
515 – 550 ई. – स्तंभराज
550 – 585 ई. – नन्दराज
585 – 625 ई. – पृथ्वीराज
625 – 660 ई. – विरूपाक्ष
660 – 700 ई. – बिलासतुंग
700 – 740 ई. – पृथ्वीव्याघ्र
900 – 935 ई. – भीमसेन देव
935 – 960 ई. – नरेन्द्र थबल

✓ बिलासतुंग के द्वारा राजीव लोचन मंदिर का निर्माण कराया गया।
✓ नलवंश का अंतिम शासक – नरेन्द्र थबल

✓ अभिलेख

- रिद्धिपुर (अमरावती, बरार क्षेत्र) – भवदत्त वर्मन
- केसरी बेड़ा (जिला – कोरापुट, उड़ीसा) – अर्थपति
- पोढ़ागढ़ (उड़ीसा) – स्कंदवर्मन

↓

अर्थपति Vs पृथ्वीसेन

↓

पुष्करी तबाह

↓

तबाह पुष्करी को पुनः बसाया (स्कंदवर्मन) ने।

राजिम – बिलासतुंग

बालोद के 'कुलिया लेख' से प्राप्त – स्कंदवर्मन के बाद नलवंश में स्तंभराज एवं नन्दराज पृथ्वीव्याघ्र का उल्लेख पल्लव नरेश नंदीवर्मन के उदयेन्दिरम शिलालेख में है।

गुप्त वंश		वाकाटक	युद्ध	नलवंश	विजयी / विजेता	
समुद्रगुप्त	Vs	महेन्द्रसेन			समुद्रगुप्त	
समुद्रगुप्त		Vs		व्याघ्रराज	समुद्रगुप्त	
		नरेन्द्रसेन	Vs	भवदत्त वर्मन	भवदत्त वर्मन	नंदी तबाह
		पृथ्वीसेन	Vs	अर्थपति भट्टारक	पृथ्वीसेन	पुष्करी तबाह (फिर से बसाया स्कंदवर्मन ने)

विद्या अतुल्य अलंकार
RAJPUT TUTORIALS